eISBN: 978-81-686924-4-2

CHAPTER-40

भारतीय भाषा परिवार :भाषाविज्ञान में एक नवीन रूपरेखा की ओर

Indian Language Families: Toward a New Framework in Linguistics

Dr. Rati Sulegaon
Hindi Department,
Northeast Christian University (NECU), Dimapur, Nagaland
sulegaon1@gmail.com

https://doi.org/10.66483/jsp.2026.001.ch40

सारांश

भारत का भाषाई परिदृश्य विश्व में सबसे अधिक विविध और जटिल है, जिसमें 19,500 *से अधिक मातृभाषाएँ और* 121 *प्रमुख भाषाएँ शामिल हैं। पारंपरिक भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण—इंडो-आर्यन, द्रविड़, ऑस्ट्रोएशियाटिक और तिब्बती-बर्मन—भारतीय भाषाओं की वंशावली को तो दर्शाते हैं, परंतु वे भारतीय भाषाओं के सांस्कृतिक, दार्शनिक और सभ्यतागत अंतर्संबंधों को पूर्णतः नहीं समझ पाते। यह शोध-पत्र भारतीय भाषा परिवार की एक नई रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें भारतीय भाषाओं को एक साझा सभ्यतागत-भाषाई नेटवर्क के रूप में देखा गया है। अध्ययन में ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, सांस्कृतिक-सांकेतिकी, संगणकीय भाषाविज्ञान, और भारतीय ज्ञान-परंपरा को एकीकृत किया गया है। यह रूपरेखा* NEP-2020 *और भारतीय भाषा समिति के उद्देश्यों के अनुरूप है और भारतीय भाषाओं के अध्ययन, शिक्षण, अनुवाद, और* NLP *तकनीकों के विकास के लिए एक नई दिशा प्रदान करती है।*

बीज शब्द : *भारतीय भाषा परिवार, भारतीय भाषाविज्ञान, ब्राह्मी लिपि, एनईपी 2020, एनएलपी, भाषा नेटवर्क, तुलनात्मक स्वर विज्ञान। (Bharatiya Bhasha Pariwar, Indian Linguistics, Brahmi Script, NEP-2020, NLP, Language Networks, Comparative Phonology.)*

1. प्रस्तावना (Introduction) -

भारत की भाषाई विविधता केवल भाषाओं की संख्या का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह एक गहन सभ्यतागत अनुभव का परिणाम है। भारतीय भाषाएँ केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति, दार्शनिक चिंतन, सामाजिक संरचना और ज्ञान-परंपरा की वाहक हैं। पारंपरिक भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण भारतीय भाषाओं को चार परिवारों में बाँटता है, परंतु यह वर्गीकरण भारतीय भाषाओं के बीच मौजूद गहरे सांस्कृतिक-दार्शनिक संबंधों को नहीं दर्शाता।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को एक नई दृष्टि से देखना है—एक ऐसी दृष्टि जो वंशावली से आगे बढ़कर सभ्यतागत निरंतरता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, ध्वन्यात्मक-व्याकरणिक अभिसरण, और संज्ञानात्मक-दार्शनिक एकता को केंद्र में रखती है। इस नई रूपरेखा को हम *भारतीय भाषा परिवार* कहते हैं।

2. विस्तृत साहित्य समीक्षा -

2.1 भारतीय भाषाविज्ञान की पारंपरिक नींव

भारतीय भाषाविज्ञान की परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और व्यवस्थित परंपराओं में से एक है। पाणिनि का *अष्टाध्यायी* (लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) न केवल संस्कृत व्याकरण का आधार है, बल्कि यह आधुनिक संरचनात्मक भाषाविज्ञान का भी पूर्वज माना जाता है। पाणिनि की व्याकरणिक प्रणाली में—

- ध्वनि-विज्ञान
- रूप-विज्ञान
- वाक्य-विन्यास
- अर्थ-मीमांसा

का अत्यंत वैज्ञानिक और संक्षिप्त रूप मिलता है।

भर्तृहरि का *वाक्यपदीय* भाषा को *स्फोट* के सिद्धांत से जोड़ता है, जिसमें भाषा को एक संज्ञानात्मक-दार्शनिक प्रक्रिया माना गया है। यह दृष्टि पश्चिमी भाषाविज्ञान से भिन्न है, जहाँ भाषा को मुख्यतः संरचनात्मक इकाई के रूप में देखा जाता है।

2.2 आधुनिक भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण की सीमाएँ -

पश्चिमी भाषाविज्ञान भारतीय भाषाओं को चार परिवारों में बाँटता है:

- Indo-Aryan
- Dravidian
- Austroasiatic
- Tibeto-Burman

यह वर्गीकरण वंशानुगत संबंधों को तो दर्शाता है, परंतु यह निम्न पहलुओं को नज़रअंदाज़ करता है:

- साझा सांस्कृतिक शब्दावली
- ब्राह्मी-आधारित लिपि-परंपरा
- ध्वन्यात्मक अभिसरण
- व्याकरणिक समानताएँ
- भारतीय ज्ञान-परंपरा का प्रभाव

उदाहरण के लिए, *धर्म, कर्म, आत्मा, अग्नि, जल* जैसे शब्द सभी परिवारों में मिलते हैं, जो सांस्कृतिक-दार्शनिक एकता का संकेत देते हैं।

2.3 भाषा-संपर्क और सभ्यतागत नेटवर्क -

भारत में भाषा-संपर्क केवल व्यापार या प्रवास का परिणाम नहीं है, बल्कि यह—

- तीर्थ-यात्राओं
- राजनैतिक एकीकरण
- साहित्यिक आदान-प्रदान
- गुरुकुल परंपरा

शास्त्रीय ग्रंथों के प्रसार का परिणाम है। इससे भारतीय भाषाओं में—

- ध्वन्यात्मक समानताएँ
- व्याकरणिक अभिसरण

सांस्कृतिक शब्दावली का साझा उपयोग विकसित हुआ।

2.4 संगणकीय भाषाविज्ञान और भारतीय भाषाएँ -

पिछले दो दशकों में NLP (Natural Language Processing) ने भारतीय भाषाओं के अध्ययन को नई दिशा दी है। परंतु अधिकांश मॉडल—

- अंग्रेज़ी-केंद्रित
- यूरोपीय भाषाओं पर आधारित
- भारतीय भाषाओं की संरचनात्मक जटिलता से अनभिज्ञ हैं।

इसलिए भारतीय भाषाओं के लिए एक नई, सभ्यतागत-आधारित रूपरेखा आवश्यक है।

3. भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक विकास: ब्राह्मी से आधुनिक लिपियों तक -

भारत की भाषाई और लिपि-परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और निरंतर विकसित होने वाली परंपराओं में से एक है। भारतीय भाषाओं का इतिहास केवल भाषाई परिवर्तन का इतिहास नहीं, बल्कि यह भारतीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, राजनीति और सामाजिक संरचना के विकास का भी इतिहास है। भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिए हमें तीन प्रमुख आयामों को देखना आवश्यक है—

1 लिपि-विकास (Script Evolution)
2 भाषाई परिवारों का ऐतिहासिक विस्तार (Historical Spread of Language Families)
3 सभ्यतागत संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान (Civilizational Exchange)

3.1 ब्राह्मी लिपि: भारतीय लिपियों की जननी

ब्राह्मी लिपि (3री शताब्दी ईसा पूर्व) भारतीय उपमहाद्वीप की लगभग सभी प्रमुख लिपियों की मूल जननी मानी जाती है। अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि—

- ध्वनि-आधारित
- सरल
- वैज्ञानिक
- उच्चारण-अनुरूप

थी, जो आधुनिक भारतीय लिपियों की नींव बनी।

ब्राह्मी से विकसित प्रमुख लिपियाँ -

ब्राह्मी से विकसित लिपि	वर्तमान भाषाएँ
देवनागरी	हिंदी, मराठी, संस्कृत, नेपाली
बंगाली-असमिया	बंगाली, असमिया
गुजराती	गुजराती
गुरुमुखी	पंजाबी
कन्नड़	कन्नड़
तेलुगु	तेलुगु
उड़िया	ओड़िया
तमिल-ब्राह्मी	तमिल
ग्रंथ	मलयालम, तमिल पर प्रभाव

इन सभी लिपियों में—

- स्वर-व्यंजन आधारित संरचना
- मात्रा-प्रणाली
- संयुक्ताक्षर
- ध्वनि-लिपि पारदर्शिता

जैसी समानताएँ मिलती हैं।

3.2 प्राकृत, अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाएँ -

संस्कृत से विकसित प्राकृत भाषाएँ (पाली, अर्धमागधी, शौरसेनी) भारतीय भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण चरण हैं। प्राकृत → अपभ्रंश → आधुनिक भाषाएँ यह क्रम भारतीय भाषाओं की प्राकृतिक विकास-यात्रा को दर्शाता है।

उदाहरण :

- शौरसेनी अपभ्रंश → हिंदी, पंजाबी, राजस्थानी
- मागधी अपभ्रंश → बंगाली, असमिया, उड़िया
- महाराष्ट्री अपभ्रंश → मराठी

3.3 द्रविड़ भाषाओं का विकास -

द्रविड़ भाषाएँ (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम) भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम भाषाओं में से हैं। तमिल भाषा का इतिहास 2000+ वर्षों से अधिक पुराना है।

द्रविड़ भाषाओं में—

- मूर्धन्य ध्वनियाँ
- आग्लूटिनेटिव संरचना

- समृद्ध काव्य-परंपरा

जैसी विशेषताएँ मिलती हैं।

3.4 भारतीय भाषाओं में अभिसरण (Convergence) -

यद्यपि भारतीय भाषाएँ चार परिवारों में बाँटी जाती हैं, परंतु उनमें—

- ध्वन्यात्मक समानताएँ
- व्याकरणिक अभिसरण
- सांस्कृतिक शब्दावली का साझा उपयोग
- लिपि-परंपरा की एकता

स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इसी अभिसरण को यह शोध-पत्र *भारतीय भाषा परिवार* की अवधारणा में समाहित करता है।

4. तुलनात्मक ध्वन्यात्मक तालिकाएँ (Comparative Phonological Tables) -

भारतीय भाषाओं में ध्वन्यात्मक समानताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। नीचे दी गई तालिकाएँ चार प्रमुख परिवारों की ध्वनियों की तुलना प्रस्तुत करती हैं।

4.1 स्वर (Vowels)

ध्वनि	हिंदी	तमिल	बंगाली	कन्नड़
अ	✓	✓	✓	✓
आ	✓	✓	✓	✓
इ	✓	✓	✓	✓
ई	✓	✓	✓	✓
उ	✓	✓	✓	✓
ऊ	✓	✓	✓	✓
ए	✓	✓	✓	✓
ओ	✓	✓	✓	✓

निष्कर्ष: सभी भारतीय भाषाओं में स्वर-प्रणाली लगभग समान है।

4.2 व्यंजन (Consonants) -

मूर्धन्य ध्वनियाँ (Retroflex Sounds) -

ध्वनि	हिंदी	तमिल	तेलुगु	बंगाली
ट	✓	✓	✓	✓
ठ	✓	✓	✓	✓
ड	✓	✓	✓	✓
ढ	✓	✓	✓	✓
ण	✓	✓	✓	✓

निष्कर्ष: मूर्धन्य ध्वनियाँ भारतीय भाषाओं की साझा पहचान हैं।

5. भाषाई नेटवर्क मॉडल (Conceptual Network Model) -

भारतीय भाषाओं को एक “नेटवर्क” के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। इस नेटवर्क में—

1 नोड्स (Nodes): भाषाएँ

2 एजेस (Edges): सांस्कृतिक, ध्वन्यात्मक, व्याकरणिक, ऐतिहासिक संबंध

3 क्लस्टर्स (Clusters): क्षेत्रीय समूह

4 हब्स (Hubs): संस्कृत, तमिल, पाली, प्राकृत

5.1 नेटवर्क मॉडल के प्रमुख घटक -

1. **सांस्कृतिक-दार्शनिक हब -**
   - संस्कृत
   - पाली
   - तमिल
2. **क्षेत्रीय क्लस्टर -**
   - उत्तर भारतीय क्लस्टर (हिंदी, पंजाबी, राजस्थानी)
   - पूर्वी क्लस्टर (बंगाली, असमिया, उड़िया)
   - दक्षिणी क्लस्टर (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम)
3. **लिपि-आधारित कनेक्शन** –
   - ब्राह्मी ⟶ देवनागरी ⟶ आधुनिक लिपियाँ
4. **ध्वन्यात्मक अभिसरण**
   - मूर्धन्य ध्वनियाँ
   - महाप्राण/अल्पप्राण

यह मॉडल भारतीय भाषाओं को एक **सभ्यतागत नेटवर्क** के रूप में प्रस्तुत करता है।

6. NEP-2020 और भारतीय भाषा समिति (Bharatiya Bhasha Samiti) का विस्तृत विश्लेषण -

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) भारतीय भाषाओं के पुनरुत्थान, संरक्षण और संवर्धन के लिए एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह नीति भारतीय भाषाओं को केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान-परंपरा, सांस्कृतिक पहचान और संज्ञानात्मक विकास का आधार मानती है। NEP-2020 का मूल संदेश स्पष्ट है—**"भाषा केवल माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान का स्वरूप है।"**

6.1 मातृभाषा-आधारित शिक्षा का सिद्धांत -

NEP-2020 के अनुसार :

- प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय भाषा में होनी चाहिए
- बहुभाषिकता को संज्ञानात्मक विकास का साधन माना गया है
- भारतीय भाषाओं में उच्च-स्तरीय सामग्री विकसित करने पर बल दिया गया है

यह दृष्टि भारतीय भाषाओं की सभ्यतागत एकता को मजबूत करती है।

6.2 भारतीय भाषा समिति (Bharatiya Bhasha Samiti) -

भारत सरकार द्वारा गठित **भारतीय भाषा समिति (BBS)** का उद्देश्य है:

- भारतीय भाषाओं के लिए एकीकृत नीति
- शब्दावली मानकीकरण
- तकनीकी शब्दकोश निर्माण
- अनुवाद-परिसंरचना (translation ecosystem)
- भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा सामग्री

BBS का दृष्टिकोण भारतीय भाषाओं को एक **साझा परिवार** के रूप में देखता है, जो इस शोध-पत्र की अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है।

6.3 भारतीय भाषाओं के लिए एकीकृत डिजिटल पारिस्थितिकी -

NEP-2020 और BBS मिलकर निम्न कार्य कर रहे हैं:

- भारतीय भाषाओं के लिए AI-आधारित अनुवाद उपकरण
- डिजिटल शब्दकोश
- भाषाई संसाधन बैंक
- भारतीय भाषाओं में MOOCs

यह प्रयास भारतीय भाषाओं को वैश्विक डिजिटल परिदृश्य में प्रतिस्पर्धी बनाता है।

6.4 नीति-स्तर पर भारतीय भाषा परिवार की प्रासंगिकता -

इस शोध-पत्र में प्रस्तावित *भारतीय भाषा परिवार* की अवधारणा NEP-2020 के निम्न उद्देश्यों को मजबूत करती है:

- ➢ भाषाई एकता
- ➢ सांस्कृतिक निरंतरता
- ➢ मातृभाषा-आधारित शिक्षा
- ➢ भारतीय ज्ञान-परंपरा का पुनरुत्थान

7. Computational Linguistics / NLP पर समर्पित अध्याय -

भारतीय भाषाओं के लिए NLP (Natural Language Processing) एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि:

- ➢ भाषाएँ संरचनात्मक रूप से विविध हैं
- ➢ लिपियाँ भिन्न हैं
- ➢ शब्द-रचना जटिल है
- ➢ संसाधन सीमित हैं

फिर भी, भारतीय भाषाओं में NLP का विकास तेजी से हो रहा है।

7.1 भारतीय भाषाओं की NLP चुनौतियाँ -

1. **Morphological richness -**
   - ➢ हिंदी, तमिल, कन्नड़ आदि में शब्द-रचना अत्यंत जटिल है।
2. **Free word order -**
   - ➢ SOV संरचना होने के बावजूद शब्द-क्रम लचीला है।
3. **Low-resource languages -**
   - ➢ कई भाषाओं के लिए कॉर्पस उपलब्ध नहीं।
4. **Script diversity -**
   - ➢ देवनागरी, बंगाली, तमिल, तेलुगु आदि अलग-अलग लिपियाँ।

7.2 भारतीय भाषाओं के लिए NLP समाधान -

- ➢ Indic NLP Library
- ➢ AI4Bharat Models
- ➢ BharatVaani
- ➢ ULCA (Universal Language Contribution API)

ये सभी भारतीय भाषाओं के लिए एकीकृत डिजिटल पारिस्थितिकी बना रहे हैं।

7.3 भारतीय भाषा परिवार मॉडल का NLP में उपयोग -

इस शोध-पत्र में प्रस्तावित मॉडल NLP के लिए अत्यंत उपयोगी है:

- ➢ भाषाई नेटवर्क मॉडल cross-lingual transfer learning को सरल बनाता है
- ➢ ध्वन्यात्मक समानताएँ speech recognition को बेहतर बनाती हैं
- ➢ लिपि-आधारित समानताएँ transliteration को आसान बनाती हैं
- ➢ सांस्कृतिक शब्दावली semantic modeling को सटीक बनाती है

8. निष्कर्ष + नीति-सिफारिशें (Policy Recommendations) -

8.1 निष्कर्ष -

यह शोध-पत्र दर्शाता है कि भारतीय भाषाएँ केवल वंशानुगत परिवारों में विभाजित भाषाएँ नहीं हैं, बल्कि वे एक साझा सभ्यतागत-भाषाई नेटवर्क बनाती हैं। इस नेटवर्क में—

1 ध्वन्यात्मक समानताएँ

2 व्याकरणिक अभिसरण

3 सांस्कृतिक-दार्शनिक शब्दावली

4 लिपि-परंपरा की एकता

5 ऐतिहासिक संपर्क

स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

इसलिए *भारतीय भाषा परिवार* की अवधारणा भारतीय भाषाओं को समझने का एक अधिक सटीक और समग्र मॉडल प्रस्तुत करती है।

8.2 नीति-सिफारिशें -

6 भारतीय भाषाओं के लिए एकीकृत डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विकसित किया जाए।
7 भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा सामग्री का निर्माण बढ़ाया जाए।
8 AI-आधारित अनुवाद और NLP मॉडल भारतीय भाषाओं के लिए अनुकूलित किए जाएँ।
9 भारतीय भाषाओं के लिए एकीकृत ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक डेटाबेस बनाया जाए।
10 NEP-2020 के अनुसार मातृभाषा-आधारित शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए।
11 भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन को विश्वविद्यालयों में अनिवार्य किया जाए।

संदर्भ सूची -

Chatterji, S. K. (1926). इंडो-आर्यन एंड हिंदी. कलकत्ता विश्वविद्यालय प्रकाशन.

Krishnamurti, B. (2003). द द्रविड़ियन लैंग्वेजेज़. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

Masica, C. P. (1991). द इंडो-आर्यन लैंग्वेजेज़. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

Pollock, S. (2006). द लैंग्वेज ऑफ द गॉड्स इन द वर्ल्ड ऑफ मेन. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस.

Subrahmanyam, P. S. (2019). इंडियन लिंग्विस्टिक ट्रेडिशन्स. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

Government of India. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

Bharatiya Bhasha Samiti. (2022). भारतीय भाषा नीति रूपरेखा. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

AI4Bharat. (2023). इंडिक NLP मॉडल्स और संसाधन. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास.

Salomon, R. (1998). इंडियन ब्राह्मी स्क्रिप्ट्स का इतिहास. यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन प्रेस.

Cardona, G., & Jain, D. (Eds.). (2003). द इंडो-आर्यन लैंग्वेजेज़. रूटलेज.

Zvelebil, K. (1990). द्रविड़ भाषाओं का इतिहास और संरचना. मोटिलाल बनारसीदास.

Emeneau, M. B. (1956). इंडिया ऐज़ ए लिंग्विस्टिक एरिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया पब्लिकेशन्स.

Sharma, R. S. (2001). भारतीय सभ्यता और भाषाई विकास. पेंगुइन बुक्स.

Grierson, G. A. (1903–1928). लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया. भारत सरकार प्रकाशन.

Sen, S. (1973). भारतीय भाषाओं का इतिहास. ओरिएंट लॉन्गमैन.

Kachru, B. B. (1986). इंडियन इंग्लिश एंड इंडियन मल्टीलिंगुअलिज़्म. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

Bright, W. (1996). भारतीय भाषाओं में ध्वन्यात्मक अभिसरण. जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिंग्विस्टिक्स.

Mishra, S. (2018). भारतीय भाषाओं में संगणकीय भाषाविज्ञान. भारतीय भाषाविज्ञान परिषद.

Ramaswamy, V. (2015). दक्षिण भारतीय लिपियों का विकास. तमिलनाडु टेक्स्टबुक सोसाइटी.

NEP Implementation Committee. (2021).

YOUR DISSERTATION DESERVES RECOGNITION, NOT A PLACE IN A STOREROOM

Publish Your Dissertation as a Book through the Emerging Scholars Series

Transform your thesis or dissertation into a professionally published scholarly work, boosting its academic visibility and impact.

Benefits

📚 ISBN Registration*
🆔 Crossref DOI Assignment
🟢 ORCID Integration
🎓 Google Scholar Discoverability
📈 Enhanced Citation Opportunities
🌍 Wider Academic Reach and Recognition
🔒 Long-Term Preservation and Accessibility

Publication Options

Jnanasetu Repository	Jnanasetu Repository Publication with an ISBN
✓ Crossref DOI Assignment ✓ Online Archiving and Preservation ✓ Academic Visibility ✓ Citations	✓ ISBN Registration ✓ Crossref DOI Assignment ✓ Professional Book Publication ✓ Global Accessibility ✓ Academic Visibility ✓ Citations

Looking to Publish Research Articles?

Researchers and scholars may also submit manuscripts to **Jnanasetu Journals** for quality-focused scholarly publication.

✓ Peer-Reviewed Journals
✓ DOI Assignment
✓ Open Access Publishing
✓ Academic Visibility
✓ Timely Editorial Processing

We Also Publish

📖 Edited Books
📚 Scholarly Monographs
📝 Conference Proceedings
🔬 Academic Journals

For more details:

Press	jnanasetupress.com	support@jnanasetupress.com
Repository	jnanaseturepository.com	editor@jnanaseturepository.com
Journals	jnanasetujournals.com	editor@jnanasetujournals.com